प्रणेता श्री भय्यूजी महाराज

राष्ट्रधर्म के पालन व जनकल्याण के लिए संकल्पित

श्री सद्गुरु दत्त धार्मिक एवं पारमार्थिक ट्रस्ट, इन्दौर

सूर्योदय नियमावली

भेंट एवं मार्गदर्शन (सेवाधारियों के लिए नियमावली)

1. गुरुदेव के आने के पूर्व आये हुये भक्तों तथा शिष्यों की लिखित में काउन्टर पर प्रविष्टियाँ। जिसमें नाम, पता, व्यवसाय, जन्म दिनांक, आने का कारण विस्तार से हो।
2. समस्या समाधान के लिये बैठने की अलग से व्यवस्था तथा दर्शनों के लिये अलग व्यवस्था हो।
3. काउन्टर पर से समस्या हेतु पर्ची नहीं दी गई है तो उसकी व्यवस्था।
4. आने वाले भक्तों के सामने सी.डी. के, डी.वी.डी के, माध्यम से गुरुदेव के प्रवचन दिखाने की व्यवस्था।
5. गुरुदेव के आने से पूर्व गुरुदेव के विचारों से संकल्पों से सिद्धांतों से आने वाले भक्तों को अवगत करना।
6. ध्यान साधना के पश्चात ही गुरुदेव से मिलने के लिये बैठक व्यवस्था में ले जाना।
7. बाहर से आने वाले भक्तों के लिये गाड़ी के पूर्व ध्यान साधना तथा गुरुदेव से मिलने की व्यवस्था करवाना।
8. दर्शनों के लिये एकत्रित लोगों को हर आधे घन्टे पश्चात गुरुदेव के समक्ष दर्शन लेने के लिये सुविधा प्रदान करना।
9. बीमार छोटे बच्चों तथा बुजुर्गो को ध्यान देकर दर्शन के लिये तथा समस्या समाधान के लिये उचित व्यवस्था करना।
10. संगठन संबंधित अथवा योजनाओं पर चर्चा करने के लिये यदि कोई मिलना चाहता है तो पहले उसकी संपूर्ण माहिती प्राप्त कर गुरुदेव से चर्चा करने पर गुरुदेव से भेट कराना।
11. अपने बेच लगाकर आश्रम में कार्य करना।
12. यदि सेवा के लिये आये हैं तो आश्रम प्रभारी से सेवा के लिये अनुमति प्राप्त कर कार्य करना।
13. आश्रम व्यवस्था को बनाये रखने में सहयता करना होगी।
14. स्वच्छता का ध्यान रखते हुये औरों का भी मार्गदर्शन करें।
15. सभी सेवाधारियों को ड्रेस कोड तथा बेच अनिवार्य हैं।
16. अपने मोबाइल बंद रखें।

नोट : सभी सेवाधारियों के लिये तथा आश्रम में आने वाले भक्तों के लिये नियमों का पालन करना अनिवार्य है।

आश्रम नियमावली

1.प्रात: 6 बजे आश्रम की सफाई के पश्चात सभी देवी–देवताओं की पूजा। 2. प्रात: 7:30 बजे श्रीकृष्ण सरस्वती महाराज की पादुकाओं की पूजा, गादी पूजन एवं गायत्री हवन। 3. प्रात: 8:30 बजे सामूहिक पाठ एवं ध्यान। 4. सुबह: 9:00 बजे नाश्ता। 5. सुबह: 11:00 बजे सामूहिक पाठ। 6. दोपहर 1 से 3 भोजन प्रसादी। 7. संध्या 4 से 6 सामूहिक मंत्र पाठ। 8. संध्या 6 से 7 ज्ञानेश्वरी पाठ। 9. संध्या 7 से 8 आरती, भजन कीर्तन। 10. रात्रि 8 से 9 भोजन प्रसाद (मात्र आश्रम में रहने वाले सेवाधारियों के लिये)। 11. रात्रि 9 से 10 व्यक्तिगत पूजा पाठ, आश्रम स्वच्छता (मात्र आश्रम में रहने वाले सेवाधारियों के लिये)। 12. रात्रि 10 बजे शयन। 13. प्रात: 7:00 बजे सभी को (सेवाधारियों एवं आनेवाले भक्त गण) ध्यान कक्ष में उपस्थित होना आवश्यक है। 14. हवन, पूजा, पूजन, सामूहिक प्रार्थना में सभी सेवाधारियों को सम्मिलित होना आवश्यक है। 15. सभी सेवाधारी व गुरूबंधु खाली समय का सद्उपयोग श्री गुरुदेव द्वारा चलाये जा रहे समाजिक प्रकल्पों में योगदान देकर करें। 16. आश्रम में रहने तथा कार्य करते समय विनयपूर्वक आचरण करें। 17. गुरुबंधु और आश्रम सेवाधारी स्नान के पश्चात पूजा कक्ष में प्रवेश करें। 18. गुरुदेव के प्रवास के दौरान आश्रम नियम की तरह ही रहेंगे। 19. अधिक समय मनन–चिंतन में व्यस्त रहें। 20. वाणी को सरल सहज विनम्र रखें। 21. आश्रम में शांति बनाये रखें। आश्रम की शांति से सबको ऊर्जा प्राप्त होती है। 22. ध्यान कक्ष के आसपास मौन रहें। 23. गुरुदेव के प्रवचन के समय, मार्गदर्शन के समय मौन रहें। धीमी आवाज में बोलें।

सूर्योदय परिवार में सम्मिलित गुरुबंधुओं के लिए

1. संगठन में कार्य करते समय प्रत्येक व्यक्ति को आश्रम शाखा की अनुमति प्राप्त करना आवश्यक है। अनुमति पत्र को साथ रखें। 2. संगठन कार्य में किये गये कार्यों का विवरण आश्रम मुख्यालय या संबंधित शाखा को देना अनिवार्य है। 3. सूर्योदय संगठन के साथ अन्य किसी संगठन से मिलकर कार्य कर रहें हैं तो उसमें लिखित आवेदन तथा संबंध में पूर्व में अनुमति प्राप्त करें। 4. बैनर, पोस्टर लगाने के लिये लिखित में अनुमति प्राप्त करें। बैनर, पोस्टर पर अधिक खर्च न करें 5. संगठन में कार्य करते समय गुरुदेव तथा सूर्योदय आश्रम के परिवार का ध्यान रखें। ऐसा कोई कार्य न हो जिससे सूर्योदय आश्रम के लिये विपरित प्रभाव हो। 6. संगठन के कार्यकर्ताओं का यथायोग्य सम्मान करें। एकता की भावना से कार्य करें। 7. संगठन में जो भी व्यक्ति कार्य करता है, उसकी किसी प्रकार की आलोचना न करें। 8. अपने बंधु–बहनों की तरह सभी का सम्मान करें। 9. संगठन में अहंकार का त्याग करें। 10. अपने किये गये कार्यों का बार–बार उल्लेख न करते हुए लिखित में उन कार्यो का प्रारुप बनाकर संगठन प्रमुख के पास सौंपे।

पूजा व्यवस्था

1. आश्रम में जहाँ गादी स्थापित हो वहाँ नित्य पूजन हो। पादुकाओं का पूजन अभिषेक यथावत हो।
2. प्रत्येक गुरुवार को गादी के समक्ष कीर्तन, भजन तथा ध्यान साधना का अभ्यास हो।
3. आश्रम में जहाँ गादी है वहाँ पर गादी का रखरखाव, स्वच्छता तथा शाम के वक्त शयन के रुप में गादी को वस्त्र से ढाँकने का नियम हो।
4. गुरुदेव के विचारों, संकल्पों को जनमानस के सामने अधिक से अधिक रखने के लिये सूर्योदय विचार आश्रम साहित्य का वितरण हो।
5. बाहरी व्यक्ति तथा शिष्य मण्डली के बीच समन्वय हो।
6. आश्रम प्रमुख या शिष्यों के पास गादी रखरखाव के लिये समय नहीं है तो पुरोहित की नियुक्ति करें। उसके लिये मुख्य आश्रम शाखा या संबंधित अधिकारी से अनुमति प्राप्त करें।

पूजन संबंधी नियम

1. पृथ्वी वंदना, सूर्य पूजन, गौमाता पूजन, राष्ट्र भाव प्रतिज्ञा, गुरुवंदना, प्रार्थना नित्य पूजन में सम्मिलित हो।
2. पारायण के नियमों में किसी एक पाठ का पारायण करें। गुरुचरित्र, श्रीदत्तात्रय व कवच, माँ काली स्त्रोत, माँ काली कवच, विष्णु सहस्त्रनाम, शिव कवच, दुर्गासप्तशती, गायत्री मंत्र, माहामृत्युंजय मंत्र, नवनाथ पारायण, श्रीकृष्ण सरस्वती महाराज पारायण आदि को सम्मिलित करें।
3. गायत्री मंत्र के साथ हवन नित्य करें।
4. सूर्योदय साधना सभी दीक्षार्थियों एवं भक्तों को अनिवार्य है। सद्गुण साधना, सोऽहम साधना, रत्नयोग साधना, ॐ कार साधना का समावेश।

- जब धर्म अध्यात्म के साथ संवाद साधना बंद कर देता है, तब संवादहीनता से उपजी रिक्तता आतंकवाद को जन्म देती है।
- धर्म मनुष्य के लिए बना है, मनुष्य धर्म के लिए नहीं ।
- धर्म की जड़ रिश्ते और समाज को छूकर राष्ट्रीय अस्तित्व के प्रभाव से विश्व शांति के लिए धर्म से उत्पन्न होती है, तब आतंकवाद की चुनौतियों का सामना करने की शक्ति धर्म में आती है।
- आतंकवाद, जातिवाद, दोहरा चरित्र व आडंबर से घिरे हुए हमारे समाज व उसकी इस व्यवस्था से राष्ट्र को मुक्त कराना ही राष्ट्र धर्म है।
- समता, समरसता, समभाव के माध्यम से बंधुत्व भाव निर्माण की प्रक्रिया को समाजवाद कहा जाता है।
- धर्म जीवन जीने की आदर्श आचार संहिता है। प्रत्येक युग की व्यवस्था है।
- युगातीत व्यवस्था को पहचानकर जो विचार निर्माण हो, वह धर्म है।
- समाज की चुनौतियों से सामना संवेदना को कर्म से जोड़ देना, यही धर्म का काम है।
- अर्थ व नीति के समन्वय से समाज का निर्माण होता है।
- सभी धर्मगुरु यदि एक साथ दहशतवाद के विरोध में खड़े हों, तो दहशतवाद समाप्त हो जाएगा, क्योंकि धर्म में बहुत ताकत होती है।
- हम समाज का निर्माण करें, मानवता का निर्माण करें, यही आज का धर्म है।
- आजादी एक बार में नहीं मिलती, उसे निरंतर पाते रहना होता है।
- निरंतर पुरुषार्थमय, निरंतर बलिदानमय राष्ट्र की अपनी वसुंधरा को अपना बनाकर रख सकता है।
- विकास, राष्ट्रीयता और मानव गरिमा को समवेत रूप में लेकर ही चलना होगा, तभी आजादी की सार्थकता सिद्ध होगी।
- विषमता, गरीबी और अत्याचारों से मुक्ति का एक ही उपाय है संगठन। देश के करोड़ों लोग अगर आपस में मिल सकें तो अपनी ही नहीं, देश की तकदीर भी बदल सकते हैं।
- मौजूदा दौर में शांति के साथ स्वतंत्रता प्रथम मूल्य है, जिस पर दूसरे सभी मूल्य आधारित हैं।
- शिक्षा के क्षेत्र में प्रतिभाओं का उत्साहवर्धन करना हमारा नैतिक व सामाजिक कर्तव्य है।
- समाज में परिवर्तन लाने के लिए व्यक्ति के सुविचार और संकल्प दोनों महत्वपूर्ण हैं।
- व्यक्ति का एक विचार, एक आदर्श व्यवस्था कितने ही युगों तक व्यक्ति का अस्तित्व बनाए रखती है।
- आज ऐसे संतों, महंतों की आवश्यकता है जो अपने ज्ञान, विचार व सत्कर्मों के माध्यम से समाज में ऐसी योजनाओं का निर्माण करें, जिससे व्यक्ति का भौतिक विकास हो, पर भौतिकतावादी स्वार्थ का भाव दूर होकर अन्तर में आध्यात्मिक चेतना जाग्रत हो।
- जब व्यक्ति का अन्तर मन किसी कार्य को करने के लिए प्रेरणा देता है तो फिर दुनिया की कोई भी शक्ति उसे रोक नहीं सकती।
- संकल्प और योजनापूर्वक किया गया छोटा–सा कार्य भी राष्ट्र के लिए बड़ा कार्य हो जाता है।
- बाल्यावस्था का संबंध ज्ञान से, गृहस्थावस्था का संबंध कर्म से, वानप्रस्थ का संबंध अनुभव और संन्यास आश्रम का संबंध आनंद से है। इस तरह आध्यात्मिक और सांसारिक जीवन दोनों ही साथ–साथ जीये जा सकते हैं।
- गरीब के पास मेहनत है, ज्ञानी के पास अच्छा मस्तिष्क एवं विचार, धनी व्यक्ति के पास धन है तो तीनों को एकत्रित करके इनकी दिव्य आत्मा को परमार्थ साधना में लगाना ही जीवन है।

प.पू. गुरुदेव के आध्यात्मिक संकल्प

इस समस्त सृष्टि रचना में मनुष्य की एक अपनी अलग विशेषता है। सभी सृष्टि के जीवों में वह इसलिये महत्वपूर्ण है कि उसमें विचार करने की और उस अनुसार संकल्प पूर्ण करने की शक्ति है। अपने इन्हीं विचारों को लेकर गुरुदेव आध्यात्मिक संकल्प करते हैं। वे नित्य पूजा, ध्यान, योग, तप को अपनी दिनचर्या में सम्मिलित करते हैं। पूजा अर्चना में वे पृथ्वी वंदन, नाग देवता पूजन, वृक्ष पूजन, जल पूजन, राष्ट्र पूजन, वायु पूजन, सूर्य पूजन को महत्व देते हैं।

गुरुदेव कहते हैं, पृथ्वी वंदना प्रत्येक व्यक्ति को करना चाहिये। हम सबसे पहले अपने पैरों को पृथ्वी पर (भूमि पर) रखते हैं। पृथ्वी हमारे जीवन जीने की सारी आवश्यकता पूर्ण करती है। हम उसे बदले में क्या देते हैं ? हम संकल्प करे नित्य पृथ्वी को प्रणाम कर उससे क्षमा याचना करें।

हमारे पुराणों में कहा गया है कि नागदेवता समस्त पृथ्वी का भार वहन करते हैं। हमारे देवों के साथ वे कभी शैय्या बनकर रहते हैं तो कभी समस्त सृष्टि को विषमुक्त करने वाले देवता के साथ लिपटे रहते हैं। चंचल होने के पश्चात भी वे स्थिरता प्रदान करते हैं। ऐसे नाग देवता को वंदन करना चाहिये। वृक्ष इस समस्त प्रकृति का संतुलन बनाये रखते हैं। हमें प्राणवायु देते है। वृक्षों से ही हम इस पर्यावरण को प्रदूषण मुक्त रखते हैं। इसलिये व्यक्ति को वृक्षों के पूजन का संकल्प करना चाहिये। जल और वायु हमारे शरीर के पंचतत्वों से है। जल, वायु, पृथ्वी, अग्नि, आकाश से यह शरीर निर्माण होता है और पुन: इन्ही पंच तत्वों में विलीन होता है। अत: जल और वायु का पूजन करना चाहिये। सूर्य हमारे साक्षात प्रत्यक्ष देवता हैं। वेदों में सूर्य को चक्षु कहा गया है। विज्ञान भी मानता है कि सूर्य के बिना धरती पर जीवन असंभव है। सूर्य का पूजन कर नित्य सूर्य का अर्ध्य देना चाहिये। इससे हमारे शरीर पर सूर्य किरणें पड़ती हैं और वह हमें निरोगी रखती हैं। साथ ही सूर्य का तेज हमारे अंदर प्रवाहित होता है। राष्ट्र पूजन का भी संकल्प गुरुदेव का है। वे कहते हैं, राष्ट्र का स्मरण प्रत्येक देशवासियों को नित्य पूजन की तरह करना चाहिये, जिससे हमारे अंदर राष्ट्रीय भावना जाग्रत रहती है।

गुरुदेव नित्य पाँच प्रकार के अन्न पक्षियों को खिलाते हैं। साथ ही नित्य चीटियों को शक्कर डालना भी वे नहीं भूलते। गुरुदेव नित्य दान देने का संकल्प करते हैं। वे नित्य ही यथायोग्य दान करते हैं। गुरुदेव जीवन में संस्कारों को बहुत महत्व देते हैं। उनका कहना है, व्यक्तियों को संस्कार माता से प्राप्त होते हैं तथा पिता से संघर्ष प्राप्त होता है। यह दोनों ही पुरुषार्थ के लिए आवश्यक है। वे नित्य माता-पिता की सेवा का संकल्प करते हैं। प्रात:काल योग, प्राणायाम, ध्यान करने का उन्होंने संकल्प लिया है। वे नित्य ही ब्रह्म मुहूर्त में उठकर अपनी दिनचर्या में इसे सम्मिलित करते हैं। गुरुदेव निरंतर सोऽहम का जाप करते हैं। वे सबसे मिलते हैं, बातें करते हैं, तब भी उनका सोऽहम निनाद चलता रहता है। उनका संकल्प है, स्त्रियों को सदा ही पवित्र दृष्टि से देखना और निरंतर माँ काली का ध्यान करना। बाह्य जगत के सारे कार्य करते हुए भी वे अपने अंतर जगत की यात्रा में खोये रहते हैं। यही वेदांत का दर्शन है। अनेकता में एकता। द्वैत में अद्वैत का भाव रखकर वे अपने संकल्पों को तप, साधना और पुरुषार्थ के माध्यम से पूर्ण करते हैं।

प्रणेता: सद्गुरु श्री भय्यूजी महाराज-

राष्ट्रधर्म के पालन व जनकल्याण के लिए संकल्पित

श्री सद्गुरु दत्त धार्मिक एवं पारमार्थिक ट्रस्ट, इन्दौर

बी.एच.-16, पंडित दीनदयाल उपाध्याय नगर, (भारत माता मंदिर), सुखलिया, इन्दौर

फोन नं. 0731-2570067, 2577786,3192777, फैक्स: 0731-4032477

E-mail: shreerup7@gmail.com, shridatt7@gmail.com, suryoday77@gmail.com, suryoday77@yahoo.com, , bhaiyyu_maharaj@yahoo.com

Website: www.bhaiyyumaharaj.org, www.bhaiyyudada.org, Twitter: bhaiyyumaharaj,

Facebook: suryodayashram, Blogs: www.suryoday.org For SMS: 09039495777